वास्तु शास्त्र - एक परिचय

'वास्तु' अर्थात् 'जो है' अथवा 'जिसकी सत्ता है' का ज्ञान कराने वाले शास्त्र को 'वास्तु शास्त्र' कहते हैं। भवन-निर्माण की वह विद्या है जो भवन को प्राकृतिक विघ्नों से बचाती है।

वास्तु शास्त्र मुख्तया तीन शास्त्रों के योग से पूर्ण होता है। विज्ञान, अध्यात्म तथा वनस्पति विज्ञान। विज्ञान के अन्तर्गत हम वायु, प्रकाश, आकाश, पृथ्वी की शुद्धता का विचार करते हैं। वहीं अध्यात्म के अन्तर्गत जीवन के उद्देश्य, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पर भी पूरा-पूरा विचार करते हैं। किन्तु बिना वनस्पति शास्त्र के वास्तु विज्ञान अधुरा होता है। आप स्वयं अनुभव करें आज प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी है। बिना पर्यावरण के मानव ही नहीं पूरी सृष्टि विनाश के कगार पर खड़ी है।

अगर प्रकृति प्रसन्न है, पेड़-पौधे तथा जीव-जन्तु स्वस्थ हैं, तो मानव प्रसन्न है। यह खुशी पर्यावरण की खुशी है जो मानव को सुखमय जीवन प्रदान करती है। विवरण मिलता है कि वास्तु शास्त्र के रचीयता भगवान शंकर हैं। उन्होंने इसका ज्ञान महर्षि, पाराशर को और पाराशर जी ने वेद को तथा मुनि वेदजी ने विश्वकर्मा जी को दिया। विश्वकर्मा जी ने इसे चराचर जगत के कल्याण के लिए वास्तु शास्त्र का ज्ञान हमारे पूर्वजों को प्रदान किया। जिससे आज सारा संसार लाभान्वित हो रहा है।

भवन-निर्माण के लिए हालांकि आज प्राचीन मान्यताओं के अनुसार भूमि उपलब्ध नहीं है तो भी यथासम्भव वास्तु शास्त्र का पालन हमारे घर को सुखों से भरने की क्षमता रखता है।

प्राचीन काल से ही 'वास्तु' को पर्याप्त मान्यता दी जाती रही है। अनेक इमारतें, मंदिर इत्यादि 'वास्तु' के अनुरूप बने होने के कारण ही प्रकृति के थपेड़ों को सहने में सक्षम हुए हैं।

वास्तव में वास्तु शास्त्र के तथ्य विज्ञान-सम्भव हैं, क्योंकि इसमें पृथ्वी के चुम्बकत्व हवाओं की दिशाओं, सौर मण्डल की विकिरणों, गुरूत्व इत्यादि का समायोजन वैज्ञानिक तरीके से किया जाता है। यही कारण है कि एक वास्तुपरक मकान में रहने वाले सुख-शांति, समृद्धि स्वास्थ्य आदि प्राप्त करते हैं, जबकि वास्तुनियमों के विपरीत बने भवन के निवासी अनेक प्रकार की समस्याओं से घिरे रहते हैं।

भवन-निर्माण और आकाश की समरसता और आनुपातिक व्यवस्था रहने से शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न रहता है। यही वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों का सार है।

-अलकेश गुप्ता